**ओ३म्**

**‘हमारे श्रद्धास्पद ऋषिभक्त आर्य भजनोपदेशक** **श्री सत्यपाल सरल’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

देश के आर्य भजनोपदेशकों में एक प्रमुख नाम है श्री सत्यपाल सरल। आप देहरादून में निवास करते हैं और विगत 20 वर्षों से हमारे परस्पर मधुर एवं निकट संबंध हैं। कुछ दिन पूर्व ही आप इन्दौर के आर्ससमाज के उत्सव से लौटे हैं। आज सायंकाल हमने उनसे उनके निवास पर अपने एक मित्र श्री राजेन्द्र कुमार, अधिवक्ता के साथ भेंट की और आर्यसमाज संबंधी गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की। परोपकारिणी सभा के पूर्व प्रधान कीर्तिशेष डा. धर्मवीर जी की चर्चा भी हुई। श्री सरल जी डा. धर्मवीर जी से परिचित होने के साथ दोनों ऋषि भक्तों के परस्पर गहरे मैत्री पूर्ण सम्बन्ध थे। सन् 2013 में डा. धर्मवीर जी आर्यसमाज धामावाला देहरादून के उत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे थे। डा. धर्मवीर जी दर्शनों के प्रसिद्ध विद्वान पं. उदयवीर शास्त्री जी के परिवार से निकटता से परिचित थे। शास्त्री जी की एक पुत्री श्रीमती आभा सिंह देहरादून में हमारे ही मुहल्ले में हमसे लगभग 1/4 किमी. की दूरी पर रहती हैं। आप उनसे मिलना चाहते थे अतः हम उन्हें साथ लेकर श्रीमती आभासिंह जी के घर गये थे। उसके बाद डा. धर्मवीर जी कुछ समय के लिए हमारे निवास पर भी आये थे। हमने पाया था कि उनका हृदय बहुत विशाल है। वह अपनी आलोचनाओं को भी नजर अन्दाज कर ऋषि भक्तों से प्रेमपूर्वक मिलते हैं। धर्मवीर जी के कहने से ही हमने सरल जी से बात की थी और डा. धर्मवीर जी और सरल जी की भी परस्पर बात कराई थी। बातचीत के अनुसार सरल जी को रात्रि के कार्यक्रम में आर्यसमाज आना था। उसी दिन रात्रि को डा. धर्मवीर जी का व्याख्यान समाप्त होने पर सरल जी व हम डा. धर्मवीर से आर्यसमाज में मिले थे। सरल जी के अनुसार डा. धर्मवीर जी की मृत्यु से आर्यसमाज की भारी क्षति हुई हैं। उन जैसा विद्वान शायद अब आर्यसमाज में दूसरा नहीं है। वह ऐसे विद्वान थे जिन्होंने अपना निजी निवास तक नहीं बनवाया और अपना सारा समय व जीवन आर्यसमाज वा परोपकारिणी सभा को ही समर्पित किया था। उनके द्वारा ऋषि उद्यान में जो कार्य चल रहे थे उनके जारी रहने व उनके अनुरूप नयी योजनाओं के क्रियान्वयन का कार्य अवरूद्ध हो गया लगता है।

सरल जी ने बताया कि मृत्यु से कुछ माह पूर्व वह और डा. धर्मवीर जी आर्यसमाज बीकानेर के वार्षिक उत्सव पर आमंत्रित थे। वहां पहुंचने पर दोनों को एक ही कमरे में ठहराया गया था। सरल जी ने बताया कि डा. धर्मवीर जी प्रतिदिन प्रातः 4:00 बजे शय्या का त्याग कर देते थे। उठकर शौच जाते और फिर लगभग एक घंटा ईश्वरोपासना व ध्यान करते थे। इसके बाद वह एक घंटा आसन-प्रायाणाम आदि करते थे। इससे निवृत होने के बाद वह लगभग एक घंटा स्वाध्याय किया करते थे। स्वाध्याय के बाद वह अपनी डायरी खोलते और परोपकारिणी सभा व उनसे जुड़े जिन आर्य परिवारों के सदस्यों का उस दिन जन्मदिवस व विवाह की वर्षगांठ आदि हुआ करती थीं, उनको फोन करते थे। फोन पर वह पहले अपना संक्षिप्त परिचय देकर एक वेद मन्त्र बोलते, उसका अर्थ करते और फिर उन्हें अपनी शुभकामनायें एवं आशीर्वाद देते थे। वह उन्हें बताते थे कि उस दिन परोपकारिणी सभा कि ऋषि उद्यान में भोजन उनके नाम से बनाया जा रहा है। इससे सभा को प्रति व्यक्ति इकयावन सौ रूपयों का दान प्राप्त हो जाता था जिससे सभा की गतिविधियां चला करती थीं। श्री सरल जी ने बताया कि डा. धर्मवीर जी की इस दिनचर्या से उन्होंने भी बहुत कुछ सीखा है।

श्री सरल जी का मानना है कि यदि आचार्य धर्मवीर जी की पिलखुआ आर्यसमाज में उचित देखभाल व चिकित्या कराई गई होती तो आज हम सबके प्रिय यह आचार्य हमारे बीच होते। सरल जी ने पिलखुआ में उनके साथ जो हुआ उसका विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने बताया कि पिलखुआ में अन्तिम दो दिन वह न तो यज्ञ करा सके थे और न ही व्याख्यान दे सके थे। वहां उनकी उचित चिकित्सा नहीं कराई गई जो कि चिन्ताजनक व दुःखद है। स्वास्थ्य की बहुत ही खराब अवस्था में वह अजमेर पहुंच पाये थे जिसको याद कर भी मन दुखी होता है। शायद आर्यसमाज की यह इस प्रकार की पहली घटना है। डा. धर्मवीर जी ने किसी तरह से अजमेर पहुंच कर वहां से ऋषि उद्यान और ऋषि उद्यान से अस्पताल जाते समय अपने साथियों को यह कहा था कि मैं ऋषि के मार्ग पर जा रहा हूं। इसमें उन्होंने अपनी भावी स्थिति का संकेत कर दिया था। सरल जी ने धर्मवीर जी की अन्य अनेक प्रेरणादायक बातों का उल्लेख किया। हमने सरल जी को हिण्डोन सिटी और उदयपुर के सत्यार्थ प्रकाश न्यास में भी सन् 1997 में सुना है। देहरादून में गुरुकुल पौंधा सहित आर्यसमाज लक्ष्मण चैक, वैदिक साधन आश्रम तपोवन, आर्यसमाज प्रेमनगर, देहरादून तथा द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल के उत्सवों में उनके ईश्वर, वेद व ऋषि भक्ति के सुमधुर व मन को झकझोरने वाले गीतों व भजनों को भी सुना है। देहरादून के कुछ निकटवर्ती स्थानों व गांवों आदि में आयोजित कार्यक्रमों में भी उनके भजनों के कार्यक्रमों में सम्मिति हुए हैं। यदा कदा कुछ कार्यक्रमों में उनके भजनों की रिकार्डिंगं भी की है।

पहले देहरादून में आर्यसमाज के अनेक विद्वान होते थे जो देश भर की आर्यसमाजों द्वारा आमंत्रित होते थे। वह उन आर्यसमाजों में जाकर वहां उपदेशों व प्रवचनों के द्वारा सेवा करते थे। इन नामों में हम पं. विश्वनाथ वेदोपाध्याय, पं. रूद्रदत्त शास्त्री, आचार्य बृहस्पति शास्त्री, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार, डा. सत्यव्रत वेदालंकार आदि प्रमुख हैं। आज देहरादून में पं. सत्यपाल सरल जी ही ऐसे एकमात्र विद्वान व भजनोपदेशक हैं जिनकी मांग पूरे देश में की जाती है और आप अपना पूरा समय आर्यसमाज के प्रचार कार्यों के लिए देते हैं। देश भर में जानें के लिए आपको लम्बी-लम्बी रेल व बस यात्रायें करनी होती हैं जिससे आपको शारीरिक कष्ट होना स्वाभिविक है। आप यह सब कष्ट सहते हैं और ऋषि मिशन को सफल बनाने के लिए उसे आगे बढ़ा रहे हैं। हमारी दृष्टि में श्री सत्यपाल सरल देहरादून के सभी आर्यसमाजों के गौरव हैं, सबके स्तुत्य एवं पूजनीय हैं।

श्री सत्यपाल सरल जी आर्यसमाज के बहुत प्रभावशाली भजनोपदेशक हैं। आप ने ऋषि ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया हुआ है। आपके भजन व उपदेश दोनों ही बहुत प्रभावशाली होते हैं। हम इसे अपना सौभाग्य मानते हैं कि हमारे उनसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं। उनके सभी पारिवारिक कार्यों में भी हमें सम्मिलित होने का अवसर मिलता है। कुछ वर्ष पूर्व जब अखिल भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् का गठन हुआ था तो उसमें आपकी प्रमुख भूमिका थी। देहरादून में आप अपनी धर्म पत्नी, दो पुत्रों व उनके परिवारों सहित निवास करते हैं। परिवार के सभी सदस्य परस्पर सहयोगी हैं। आपका परिवार एक आदर्श आर्य परिवार है, यह हमने अनेक बार आपके निवास पर जाकर अनुभव किया है। श्री सत्यपाल सरल जी स्वस्थ व दीर्घायु हों, उनके परिवार में सुख समृद्धि हो, यह हमारी ईश्वर से प्रार्थना व कामना है।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**